केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र

गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयागराज

विश्व आयुर्वेद मिशन

के संयुक्ततत्त्वाधान में आयोजित

राष्ट्रिय कार्यशाला

11.01.2026 - 13.01.2026

भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद

National Workshop on Āyurveda in Indian Knowledge System

भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद को जीवन-विज्ञान के रूप में स्वीकार किया गया है। आयु (जीवन) और वेद (ज्ञान) के समन्वय से विकसित आयुर्वेद केवल रोग-चिकित्सा तक सीमित न होकर स्वास्थ्य संरक्षण, जीवन-संतुलन, मानसिक–आध्यात्मिक उन्नयन तथा नैतिक जीवन-दृष्टि प्रदान करता है। वेदों, उपनिषदों, चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टाङ्गहृदय आदि ग्रन्थों में शरीर रचना, शरीर क्रिया, रोग निदान, चिकित्सा, आहार-विहार, योग तथा पर्यावरण-संतुलन की समग्र वैज्ञानिक अवधारणा प्रस्तुत है।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जहाँ जीवनशैलीजन्य रोग, मानसिक तनाव एवं पर्यावरणीय संकट बढ़ रहे हैं, वहाँ आयुर्वेद की समग्र स्वास्थ्य दृष्टि (Holistic Health Approach) अत्यन्त प्रासंगिक हो जाती है।

आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली में जैव-चिकित्सीय (Biomedical) मॉडल प्रमुख है, परन्तु यह जीवनशैली मानसिक स्वास्थ्य एवं निवारक चिकित्सा के क्षेत्र में सीमित सिद्ध होता है। इसके विपरीत आयुर्वेद -

- शरीर–मन–आत्मा के समन्वय पर आधारित है।
- स्वास्थ्य संरक्षण को रोगोपचार से अधिक महत्त्व देता है।
- आहार, आचार, विचार और व्यवहार को चिकित्सा का अंग मानता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP-2020) एवं **भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)** के अंतर्गत आयुर्वेद आधारित शिक्षा में अनुसंधान एवं नवाचार को विशेष प्रोत्साहन दिया गया है। अतः आयुर्वेद के शास्त्रीय सिद्धान्तों का आधुनिक सन्दर्भ में पुनर्पाठ एवं नव-अनुसन्धान अत्यावश्यक है।

कार्यशाला के उद्देश्य -

1. भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद के दार्शनिक एवं वैज्ञानिक आधारों का विवेचन।
2. आयुर्वेदिक शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञान की मौलिक अवधारणाओं को समझना।
3. आयुर्वेदिक रोग-निदान पद्धति एवं चिकित्सा सिद्धान्तों का विश्लेषण।
4. स्वास्थ्य संरक्षण में स्वस्थवृत्त, योग एवं जीवनशैली की भूमिका का अध्ययन।
5. आयुर्वेद में नव-अनुसन्धान के विविध क्षेत्रों की पहचान।
6. NEP-2020 एवं IKS के परिप्रेक्ष्य में आयुर्वेद आधारित शोध-दृष्टि का विकास।

कार्यशाला के प्रमुख विषय क्षेत्र -

(क) भारतीय ज्ञान परम्परा में शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञान

त्रिदोष, सप्तधातु, मल, अग्नि एवं ओजस् की अवधारणा।

आधुनिक एनाटॉमी एवं फिज़ियोलॉजी से तुलनात्मक अध्ययन।

(ख) स्वस्थवृत्त विज्ञान एवं स्वास्थ्य संरक्षण -

दिनचर्या, ऋतुचर्या, सद्वृत्त।

निवारक चिकित्सा में स्वस्थवृत्त का महत्त्व।

(ग) आयुर्वेदीय रोग निदान पद्धति -

नाड़ी परीक्षा, दशविध परीक्षा, षट्विध परीक्षा।

रोग–रोगी परीक्षण की समग्र दृष्टि।

(घ) वृक्षायुर्वेद -

वनस्पति-स्वास्थ्य, कृषि एवं पर्यावरण संरक्षण।

वृक्षायुर्वेद का आधुनिक कृषि विज्ञान से समन्वय।

(ङ) कौमारभृत्य (बाल चिकित्सा) -

गर्भाधान से बाल्यावस्था तक स्वास्थ्य संरक्षण।

बाल पोषण, प्रतिरक्षा एवं मानसिक विकास।

(च) स्त्री रोग एवं प्रसूति तंत्र -

स्त्री स्वास्थ्य की आयुर्वेदिक अवधारणा।

गर्भावस्था, प्रसव एवं प्रसवोत्तर देखभाल।

(छ) शल्य तंत्र -

सुश्रुत संहिता में वर्णित शल्य एवं क्षारकर्म।

प्राचीन शल्य तकनीकों का आधुनिक महत्त्व।

(ज) जीवनशैली जन्य रोगों में वैदिक वनौषधियाँ -

मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा आदि में औषधीय पौधे।

औषधीय द्रव्यों का वैज्ञानिक विश्लेषण।

(झ) स्वास्थ्य संरक्षण एवं रोगोपचार में योग -

योग, प्राणायाम एवं ध्यान का चिकित्सकीय उपयोग।

आयुर्वेद–योग का समन्वित मॉडल।

कार्यशाला का स्वरूप

1. विषय विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान एवं मार्गदर्शन।
2. पैनल चर्चा : Ayurveda & Modern Health Sciences
3. शोध प्रस्ताव निर्माण सत्र।
4. अनुभव एवं केस-स्टडी आधारित चर्चा।

लक्षित प्रतिभागी

1. शोधार्थी (Ph.D., Post-Doctoral)
2. आयुर्वेदाचार्य एवं वैद्य।
3. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विज्ञान के अध्यापक।
4. IKS, आयुष एवं योग में रुचि रखने वाले विद्यार्थी।

भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System – IKS) में आयुर्वेद का स्थान केन्द्रीय एवं आधारभूत है। आयुर्वेद के सिद्धान्तों, प्रयोगात्मक पक्ष तथा दार्शनिक आधार को समझे बिना भारतीय ज्ञान परम्परा का सम्यक् एवं यथार्थ बोध सम्भव नहीं है। अतः आयुर्वेद विषयक अनुसंधान में संलग्न शोधार्थियों, अध्येताओं एवं चिकित्सकों में एक समुचित, वैज्ञानिक तथा समन्वित अनुसन्धान-दृष्टि का विकास अत्यन्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के गंगानाथ झा परिसर में स्थित भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र द्वारा दिनांक 11 जनवरी 2026 से 13 जनवरी 2026 तक आयुर्वेद विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में प्रतिष्ठित एवं अनुभवी विद्वान् अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों एवं मार्गदर्शन द्वारा प्रतिभागियों को लाभान्वित करेंगे।

कार्यशाला के अंतर्गत आयुर्वेद के शास्त्रीय सिद्धान्तों, चिकित्सकीय प्रयोगों तथा नव-अनुसन्धान दृष्टि पर केन्द्रित व्याख्यान, संवाद एवं विमर्श आयोजित किए जाएंगे। इसमें आयुर्वेद के विविध अंगों—जैसे शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञान, द्रव्यगुण विज्ञान, रोग निदान पद्धति, स्वस्थवृत्त, रसायन चिकित्सा, कौमारभृत्य, स्त्री रोग एवं प्रसूति तंत्र, शल्य तंत्र तथा योग—का आधुनिक विज्ञान एवं बहुविषयक अनुसन्धान दृष्टि से समन्वित अध्ययन किया जाएगा।

यह कार्यशाला आयुर्वेद में निहित समग्र एवं समन्वयात्मक स्वास्थ्य-दृष्टि को आधुनिक बहुविषयक, अन्तर्विषयक एवं पराविषयक अनुसंधान क्षेत्रों में पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास करेगी। इस प्रकार का अनुसंधान-मार्ग न केवल आयुर्वेदिक परम्परा के गौरव को पुनः स्थापित करने में सहायक होगा, अपितु वर्तमान समय की जीवनशैलीजन्य रोगों, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय संकटों के समाधान हेतु आयुर्वेद आधारित नवीन अनुप्रयोगों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगा।

इस कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागी आयुर्वेद की वैश्विक प्रासंगिकता को समझ सकेंगे, आयुर्वेद आधारित नव-अनुसन्धान की संभावनाओं से परिचित होंगे तथा अनुसंधान के क्षेत्र में नई दिशाओं का अवगाहन करेंगे। साथ ही प्रतिभागियों में भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टि के साथ सांस्कृतिक गौरवबोध भी सुदृढ़ होगा। निस्संदेह, आयुर्वेद केवल अतीत की गौरवशाली चिकित्सा परम्परा का प्रतीक नहीं है, अपितु वह भविष्य की समग्र, सतत एवं मानव-केन्द्रित स्वास्थ्य प्रणाली का मार्गदर्शन करने वाली एक प्रकाशमान परम्परा है। इस राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन प्रतिभागियों में आयुर्वेद तथा भारतीय ज्ञान परम्परा की सम्यक् समझ विकसित करने के साथ-साथ एक समन्वित एवं नवोन्मेषी अनुसन्धान-दृष्टि प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परम्परा का प्राणतत्त्व है। इसे आधुनिक संदर्भ में वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं नीति के साथ समन्वित कर न केवल स्वास्थ्य संरक्षण बल्कि समग्र मानव कल्याण के लिए प्रभावी समाधान प्रस्तुत किए जा सकते हैं। यह कार्यशाला उसी दिशा में एक सार्थक प्रयास सिद्ध होगी।

आमन्त्रित विद्वान्

1. प्रो. गिरीश चंद्र त्रिपाठी, पूर्व कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
2. प्रो. के रामचन्द्र रेड्डी, कुलपति, महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय, गोरखपुर
3. प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति, निदेशक,अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली
4. डॉ महेश दधीच, मुख्य कार्यपालक, अधिकारी, राष्ट्रीय औषधि पादप बोर्ड आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
5. प्रो. गिरीन्द्रसिंह तोमर,, अध्यक्ष विश्व-आयुर्वेद-मिशन, प्रयागराज
6. प्रो नीरू नथानी, विभागाध्यक्ष, स्वस्थवृत्त एवं योग आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
7. प्रो. सामू प्रसाद पाल, विभागाध्यक्ष, शरीर रचना राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, हण्डिया, प्रयागराज
8. डॉ रमेश कांत दुबे, विभागाध्यक्ष, स्वस्थवृत्त राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, हण्डिया, प्रयागराज
9. प्रो. प्रेम स्वरूप श्रीवास्तव, पूर्व प्राचार्य, स्टेट आयुर्वेदिक कालेज लखनऊ
10. डॉ हरिशंकर मिश्रा, विभागाध्यक्ष, द्रव्यगुण ललित हरि स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय, पीलीभीत
11. प्रो. वीरेन्द्र कुमार, पूर्व विभागाध्यक्ष, कौमारभृत्य राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय, वाराणसी
12. डॉ अंजना सक्सेना, विभागाध्यक्ष प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय, वाराणसी
13. डॉ अरुण कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष, शल्यतंत्र राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय हण्डिया, प्रयागराज
14. प्रो. केदार नाथ, प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री स्मारक राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, हण्डिया, प्रयागराज
15. डॉ. अवनीश पाण्डेय, चिकित्सा अधिकारी, राजकीय आयुर्देव चिकित्सालय, प्रयागराजः

पञ्जीकरण की अन्तिम तिथि **09.01.2026 (11:00 AM)**

अर्ह प्रतिभागियों की सूचना **09.01.2026 (04:00 PM)**

कार्यशाला अवधि- **11.01.2026 - 13.01.2026**

आवेदन लिंक - **https://forms.gle/3osr554EmXhaYDEn9**

कार्यशाला में भाग ग्रहण हेतु आवश्यक निर्देश -

1. निर्धारित तिथि तक पंजीकरण करना अनिवार्य है।
2. कार्यशाला ऑनलाइन एवं ऑफ़लाइन माध्यम से आयोजित की जाएगी।
3. कार्यशाला में आचार्य, सह-आचार्य, सहायक आचार्य तथा शोध छात्र भाग ले सकते हैं।
4. कार्यशाला में भाग लेने के लिए लिंक के माध्यम से आवेदन करना होगा। आवेदनों की समीक्षा के पश्चात चयनित अभ्यर्थियों को ई-मेल द्वारा सूचना दी जाएगी।
5. प्रतिभागियों की न्यूनतम 95% उपस्थिति अनिवार्य है; उपस्थिति के आधार पर प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।
6. कार्यशाला में दिया गया कार्य अनिवार्य रूप से पूर्ण करना होगा।

मध्याह्न भोजन की व्यवस्था की गई है। आवास की व्यवस्था प्रतिभागियों को स्वयं करनी होगी।

संरक्षक

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
जनकपुरी, नव देहली

अध्यक्ष

प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी

अधिष्ठाता (शैक्षणिकवृत्त)
निदेशक, गङ्गानाथ झा परिसर,
प्रयागराज (उ.प्र.)

कार्यशाला संयोजक

प्रो. देवदत्त सरोदे

संयोजक, भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र

कार्यशाला सहसंयोजक

डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी

संयोजक, प्राक्शोध पाठ्यक्रम

संयोजन समिति

प्रो. बनमाली बिश्वाल, प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय 'परमहंस', प्रो. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि', प्रो. मनोज कुमार मिश्र, प्रो. अपराजिता मिश्रा, डॉ. सुरेश पाण्डेय, डॉ. राज कुमार मिश्र, डॉ. मोनाली दास, श्रीअंकित मिश्र।

प्राविधिक समिति

श्रीराजीव ठाकुर, श्रीसन्दीप, श्रीअमित

सम्पर्कसूत्रम् –
डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी – 7752847621